मैत्रावरुणर्वसिष्ठः।इन्द्राग्नी। त्रिष्टुप्।

शुचिं नु स्तोमं नवजातमद्येन्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम्।
उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा॥ ७.०९३.०१

शुचिम्- परिशुद्धम्। स्तोमम्- मन्त्रम्। नवजातम्- अभिनवम्। इन्द्राग्नी। वृत्रहणा- आवरणबाधकौ। नु- क्षिप्रम्। जुषेथाम्- सेवेथाम्। उभा- उभौ। हि- खलु। वाम्- युवाम्। सुहवा- सुष्ठु आहूयमानौ। जोहवीमि- आह्वयामि। ता- तौ। उशते- कामयमानाय। सद्यः- क्षणेन। वाजं धेष्ठा- बलधारकौ भवतः॥१॥

ता सानसी शवसाना हि भूतं साकंवृधा शवसा शूशुवांसा।
क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरेः पृङ्क्तं वाजस्य स्थविरस्य घृष्वेः॥ ७.०९३.०२

ता- तौ। सानसी- सर्वैः सम्भजनीयौ। शवसाना- बलिनौ। हि- खलु। भूतम्- भवतम्। साकं वृधा- सह वर्धमानौ। शवसा- बलेन। शूशुवांसा- वर्धमानौ। भूरेः- प्रभूतस्य। यवसस्य- अन्नस्य। रायः- धनस्य। क्षयन्तौ- स्वामिनौ। स्थविरस्य- स्थूलस्य। घृष्वेः- शत्रुघर्षणशीलम्। वाजस्य- बलम्। पृङ्क्तम्- संयोजयतम्॥२॥

उपो ह यद्विदथं वाजिनो गुर्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः।
अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नरस्ते॥ ७.०९३.०३

विप्राः- मेधाविनः। प्रमतिम्- उत्तममतिम्। इच्छमानाः- कामयमानाः। धीभिः। वाजिनः- सद्गतिमन्तः। यत्- ये। विदथम्- उपासनम्। उपो गुः- उपगच्छन्ति। ते। नरः- मनुष्याः। अर्वन्तः- अश्वाः। न- इव। काष्ठाम्- दिशम्। नक्षमाणाः- व्याप्नुवन्तः। इन्द्राग्नी। जोहुवतः- आह्वयन्ति॥३॥

Dr Rangani
WEBOLIM

गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ईट्टे रयिं यशसं पूर्वभाजम्।

इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा प्र नो नव्येभिस्तिरतं देष्णैः॥ ७.०९३.०४

पूर्वभाजम्- पूर्वमेव सम्भजनीयम्। यशसम्- अन्नम्। रयिम्- दानयोग्यधनमुद्दिश्य। प्रमतिम्- प्रकर्षमतिम्। इच्छमानः- कामयमानः। विप्रः- मेधावी। गीर्भिः- वाग्भिः। सुवज्रा- वज्रपाणी। वृत्रहणा- आवरणबाधकौ। इन्द्राग्नी। ईट्टे- स्तौति। देष्णैः- दानैः। नव्येभिः- अभिनवैः। नः- अस्मभ्यम्। प्र- प्रकर्षेण। तिरतम्- वर्धयतम्॥४॥

सं यन्मही मिथती स्पर्धमाने तनूरुचा शूरसाता यतैते।

अदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा हतं सोमसुता जनेन॥ ७.०९३.०५

यत्- यदा। मही- महत्यौ। मिथती- परस्परं हिंसन्त्यौ। स्पर्धमाने। तनूरुचा- दीप्तशरीरे। शूरसाता- युद्धे। सं यतैते- यत्नं कुरुतस्तदा। विदथे- यज्ञे उपासने। देवयुभिः- ज्योतिष्कामैः। अदेवयुम्- अन्धकारकामम्। सोमसुता- रसनिष्पादकेन। जनेन। हतम्॥५॥

इमामु षु सोमसुतिमुप न एन्द्राग्नी सौमनसाय यातम्।

नू चिद्धि परिमन्नाथे अस्माना वां शश्वद्भिर्ववृतीय वाजैः॥ ७.०९३.०६

इन्द्राग्नी। इमाम्- एतत्। सोमसुतिम्- रसनिष्पादनम्। नः- अस्माकम्। सौमनसाय- शोभनचित्ताय। उप यातम्- आगच्छतम्। अस्मान्- नः। नु- क्षिप्रम्। हि- खलु। परिमन्नाथे- मन्येथे। शश्वद्भिः- बहुभिः। वाजैः- हव्यैः। वाम्- युवाम्। ववृतीय- आवर्तयामि॥६॥

सो अग्न एना नमसा समिद्धोऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचेः।

यत्सीमागश्चकृमा तत्सु मृळ तदर्यमादितिः शिश्रथन्तु॥ ७.०९३.०७

सः- असौ त्वम्। अग्ने। एन- अनेन। नमसा- नमस्कारेण। समिद्धः- सम्यगुद्दीपितः। मित्रम्- स्नेहाधिदैवतम्। वरुणम्- ऋताधिदैवतम्। इन्द्रम्- बलाधिदैवतम्। अच्छ- अभिलक्ष्य। वोचेः- ब्रूहि। यत्। सीम्- सर्वतः। आगः- अघम्। चकृम- कृतवन्तः। तत्। अर्यमा- दानाधिदेवता।

Dr. Rangaji

WEBOLIM

अदितिः- अखण्डप्रकृतिः। अन्ये देवाश्च। शिश्रयथन्तु- वियोजयन्तु। तत्- तस्मादघात्। सु मृळ- सुष्ठु रक्ष ॥७॥

एता अग्न आशुषाणास इष्टीर्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान्।
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७.०९३.०८

अग्ने। एताः- इमाः। इष्टीः- मनीषाः। आशुषाणासः- क्षिप्रं सम्भजमानाः। युवोः- युवयोः। वाजान्- अन्नानि। सचा- युगपदेव। अभ्यश्याम- अनुभवेम। इन्द्रः- बलाधिदेवता। विष्णुः- सर्वव्यापी परमात्मा। मरुतः- प्राणविशेषाः। नः- अस्मान्। मा। परि ख्यन्- परित्यजत। परिख्यानं त्याग इति वेङ्कटमाधवः। यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

Dr. Rangani

WEBOLIM